भारत में संत्र निर्माण के विभिन्न तकनीकियों का पलेखीकरण

प्रस्तुतकर्ता
बिपुल कुमार राय

1st Report

File No. 28-6/1CH-SCHEME 2015-16/11

UNDER THE SCHEME

भारत की अमुर्त सांस्कृतिक विरासत एवं परंपराओं की संरक्षण योजना

संगीत नाटक अकादमी

नई दिल्ली – 110001

भारत में संत्र निर्माण के विभिन्न तकनीकियों का प्रलेखीकरण

सांगतिक वाद्यों ने संगीत की समृद्ध, क्रियात्मक एवम् वादन परम्परा के विकास को प्रस्तुत करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। चतुर्विध वाद्यों में तंत्री वाद्यों को प्रमुखता प्रदान की गई है। तंत्री वाद्यों की ध्वनि मानव कण्ठ के अत्यंत निकट है, तभी तो मनीषियों ने मानव को 'दैवी वीणा' कहा है। संगीत की अधिष्ठात्री देवी भी तंत्री वाद्य 'वीणा' को ही धारण करती है। कंठ संगीत को आधार स्वर प्रदान करने में भी तंत्री वाद्यों के तारों को छेड़कर ही सांगीतिक वातावरण की निर्मिति की जाती है। प्राचीनकाल से लेकर वर्तमान सांगीतिक समय तक तंत्री वाद्यों के अनेकानेक रूप शास्त्रीय संगीत में प्रचलित रहे। 20वीं शताब्दी में भारतीय तंत्री वाद्यों का स्वरूप निखरकर सामने आया। इसका प्रचलन न केवल भारत अपितु समूचे विश्व में ज़ोर–शोर से हुआ। इस शताब्दी में भारतीय संगीत में कुछ नवीन वाद्यों का भी समावेश हुआ, जैसे संतूर गिटार, क्लैरिनेट, मैंडोलिन आदि।

इस प्रकार भारतीय तंत्री वाद्यों की श्रेणी में संतूर को इस शताब्दी में एक विशेष स्थान प्राप्त हुआ। 20वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में भारतीय शास्त्रीय संगीत में संतूर वाद्य का आगमन हुआ। संतूर वाद्य ने शास्त्रीयता की भूमि पर कदम रखते ही अपनी विशिष्टताओं के कारण एकल वाद्य के रूप में अपना स्थान बना लिया है।

प्राचीन काल में 50 से भी अधिक भिन्न आकार एवं गुणों वाली वीणा का उल्लेख मिलता है। ऋग्वेद में हमें प्रमुख रूप से जिस वाद्य का उल्लेख मिलता है वह है वाण। यह वाद्य सामगान की संगत के लिए प्रयुक्त होता था। वाण का अर्थ था 100 तारों वाली वीणा इसे शततंत्री वीणा भी कहते थे।

ठाकुर जयदेव सिंह के अनुसार – ऐसा भी हो सकता है कि यह वाद्य भारत में इन देशो में गया हो या विदेशों से भारत आया हो।

श्री चैतन्य देव के अनुसार 'वाण' सभी वाद्यों में प्रमुख था इसलिए इसे 'महावीणा' भी कहा जाता था। वैदिक ग्रंथों के साथ आरण्यक ग्रंथों एवं सूत्र ग्रंथों में भी वाण वाद्य का वर्णन मिलता है। संतूर वाद्य की उत्पत्ति के विषय कोई चिशेष प्रमाण नहीं मिलते। परंतु अधिकतर विद्वानों में इसे प्राचीन भारतीय वाद्यों का वंशज माना है जो कि प्राचीन काल में लोकप्रिय रहा और वहां भी एक अत्यंत लोकप्रिय संगीत विधा सूफ़ियाना मौसिकी में भी प्रयोग किया जाता है।

संतूर मुख्यतः तीन प्रकार के प्रचलन में है।

1. सूफियाना संतूर
2. पं. शिवकुमार शर्मा की शैली का संतूर
3. पं॰ भजन सोपोरी की शैली का संतूर

सूफियाना संतूर की बनावट एवं वादन–सूफियाना संतूर का निर्माण शुभ मुर्हत में शहतुत की लकड़ी से होता है इसका आकार एक चतुर्भज बक्से जैसे होता है जिसका बायें से दायें की ओर जानेवाला भाग 75 डिग्री के कोण का होता है। इसका सामानांतर भाग जो वादक की ओर होता है करीब 25 इंच होता है। इसके आमने सामने और दाहिनें बायें भाग का अनुपात 2/1 होता है यह वाद्य लगभग साढे चार इंच लकड़ी का बनता है वह इसकी ऊँचाई होती है यह लकड़ी अंदर से खोखली होती है इसके उपरी सतह अर्थात तबली से छिद्र होते हैं, जिसमें प्रतिध्वनि अनुगुंज पैदा होती है।

पहले इसके तार सन अथवा तांत के बनते थे। तारों की लंबी कतारें इस वाद्य पर बायें से दायें की ओर जाती है जिसे दाहिने ओर बने चाबियों से नियंत्रित किया जाता है। सामान्यतः तारों को उपर उठाये रखने के लिए एक सेतु या गोटा होता है इस तरह सौ तार उठाने के लिए 25 सेतु होते हैं किनारों की उस काष्ट फलक जिससे तारें बंधी होती है कि ऊचाई सेतु से लगभग एक इंच कम होती है 25 सेतुओं पर अवलंबित 4–4 तारों के इन समूहों को एक–एक स्वरों में मिलाना होता है।

संतुर में स्वरोत्पत्ति छोटी लकड़ियों से प्रहार करके की जाती है। जिन्हें कलम कहा जाता है। संस्कृत साहित्य में इसके लिए काष्ठ शब्द का प्रयोग हुआ है। यह कलम लगभग 6 इंच लंबी होती है इसके सामान्यतः तीन भाग होते है। पहला भाग वह जहाँ से उसे पकड़ा जाता है, दूसरा

मध्य भाग जिस के अंत में घुमाव से पहले मिज़राब होता है, जिससे तारों पर प्रहार किया जाता है, और तीसरा आगे की ओर मुड़ा हुआ भाग, इस मुडे हुए भाग की आकृति सर्प के फन की तरह होती है। कश्मीर में नागवंशियों के प्रभाव के कारण ही इसकी आकृति सर्पाकार है सौ तारों को उठाये रखने के लिए निर्मित इन 25 सेतुओं में 13 बायें और होती है और 12 दांयी ओर, तारों को मिलाने वाली चाबी और नियंत्रित करने वाले हैमर लौह निर्मित होते हैं। जैसा कि सर्वविदित है कि दूसरे भारतीय तंत्र वाद्यों की तरह भारतीय संतूर से भी एक विशेष आसन में बैठकर बजाया जाता है। सूफियाना संगीत में प्रयुक्त होने वाले संतुर के स्वरों की पहुँच प्रायः एक से डेढ़ सप्तक तक की होती है। पहले ऐसे कुछ संतुर में 96 तारें थी और 24 सेतु भी पाई जाती थी, लेकिन ऐसे संतुर अब बहुत ही कम पाये जाते हैं।

पंडित शिवकुमार शर्मा की शैली संतूर एवं उसका क्रमिक विकास– संतूर एक खोखला बक्सा है जिसके उपर ब्रिज को जाने वाले लकड़ी के टुकड़े होते हैं। कश्मीरी संतूर में सौ तार और पच्चीस ब्रिज होते हैं। प्रत्येक ब्रिज के आर–पार चार तार है। सरगम के लिए प्रत्येक ब्रिज के उपर के चारों तार एक ही स्वर 'सा' या 'ग' से मिला दिये जाते हैं। स्वर मिलाने की एक ऐसी प्रणाली थी एक ओर लोहे के तार होते थे जो मध्यम सप्तक में और दूसरी ओर पीतल की तार जो मन्द्र में स्वर निकालते थे। जो स्वर एक ओर मिलाये जाते वही दूसरी ओर भी मिलाए जाते, यही एक त्रुटि थी। तार सप्तक और मन्द्र सप्तक नहीं थे और सभी का विस्तार सीमित

तथा वादक तार सप्तक में सबसे ऊँचे स्वर ग स्वर तक ही पहुंच सकता था। पंडित शिवकुमार शर्मा की शैली के संतूर को गोद में रखकर बजाया जाता है। इस विकसित संतूर में 31 ब्रिज तथा 116 तारों का प्रयोग किया जाता है।

पंडित भजन सोपोरी जी की संतूर में संगीत की रागदारी पूरी शुद्धता और क्षमता के साथ प्रस्तुत करने के उद्देश्य से इसमें क्रांतिकारी परिवर्तन करते हुए सोपोरी बाज को नई ऊँचाई दी। इस संतूर में एक विशेष तुम्बा भी होता है और बैठने का एक विशेष अर्ध सम्पदा आसन भी जिसमें संतूर का एक हिस्सा कलाकार के बाये पैर पर टिका होता है जबकि वाद्य का शेष भाग वादक की गोद में होता है। इस संतूर में 130 तारों को 47 सेतुओं में विभक्त करके स्वरोत्पत्ति की क्षमता तीन सप्तक से भी अधिक बढ़ाई गई है। अनुगुंज और आस को देर तक टिकाये रखने के लिए सितार एवं सरोद की तरह इसमें भी चिकारी एवं तरब के तारों का पहली बार प्रयोग किया गया है। भारतीय शास्त्रीय संगीत के अनिवार्य तत्व मींड, गमक, सपाट, घसीट एवं कृंतन आदि सफल प्रयोग किया गया है।

संतूर वाद्य के अंग तथा वादन सामग्री

1. **रेजोनेन्स बॉक्स** – संतूर की तबली वाला भाग जिस पर सभी सेतु स्थित रहते हैं। वह रेजोनेन्स बाक्स कहलाता है। इस बॉक्स के कारण ही ध्वनि की गूँज बनती है। यह तुनरोज़ वुड, प्लाई, बादाम की लकड़ी इत्यादि से मिलकर बना होता है। इसका आकार चतुर्भुज होता है बाएँ से

दाएँ और जानलेवा भाग 75 डिग्री के कोण होता है। इसका सामानांतर भाग जो वादक की ओर होता है। करीब 25 इंच का होता है। इसके आमने–सामने और दाहिने बायें वाले भाग का अनुपात 2:1 होता है।

2. **कलम** – संतूर में स्वरोत्पत्ति दो छोटी लकड़ियों से प्रहार करके की जाती है, जिन्हें कलम कहा जाता है। इसकी लम्बाई लगभग 6 इंच की होती है। पहला भाग वह जहाँ से उसे पकड़ा जाता है दूसरा मध्य भाग जिसके अंत में घुमाव से पहले मिज़राब होता है। जिससे तारों पर प्रहार किया जाता है, और तीसरा आगे की ओर मुडा हुआ भाग वह मालबरी की लकड़ी की बनाई जाती है।

3. सेतु या गोटा (Bridge) – इसका आकार लगभग शतरंज के प्यादे सदृश होता है तथा इसके ऊपरी भाग में हड्डियाँ जुड़ी होती है जो बारीकी से धीसी होती है। सेतु के ऊपर से होकर तारे गुजरती हैं, सेतु तूत की लकड़ी से बनाई जाती है। इसके ऊपर भाग में पहले बारहसिंघा एवं हाथी दाँत प्रयोग किया जाता था। लेकिन वर्तमान समय में इसकी उपलब्धता न होने के कारण जानवरों की हड्डियाँ प्रयोग की जाती है।

4. हैमर – यह लौह निर्मित होता है जिसकी लम्बाई लगभग 5 इंच की होती है। संतूर को ट्यून करने के लिए इसका प्रयोग किया जाता है।

5. **चाबी** – यह भी लौह निर्मित ही होता है। यह दो प्रकार का होता है। पहला भाग आगे से थोड़ा चपटा होता है। जि?समें तारे बंधी होती है और दूसरा भाग नुकीला होता है जिसमें दूसरी तरफ तारें बंधी होती है।

6. **विभिन्न प्रकार की तारें**– सूफियाना संतूर में एक तरफ पीतल की तारें तथा दूसरी ओर लोहे की तारें प्रयुक्त की जाती है। लेकिन शास्त्रीय संगीत वाले संतूर के महज एवं तार सप्तक में स्टील की तारें (जर्मन) तथा मंद सप्तक में गिटार में लगने वाली तारें प्रयुक्त की जाती है।

6. **तुम्बा** – यह भी लकड़ी का बना होता है यह सितार एवं सरोद के तुम्बे से थोड़ा अलग होता है। इस विशेष प्रकार के तुम्बे का प्रयोग पंडित भजन सोपोरी जी की परम्परा में ही किया जाता है।

7. **ब्रिज** – यह दो प्रकार का है, एक तो संतूर में दूसरा प्रयोग तरब की तारों के ऊपर में मींड के लिए इसका प्रयोग किया जाता है। यह दोनों प्रकार के ब्रिज भी पं॰ भजन सोपोरी जी के संतूर में प्रयुक्त होता है।

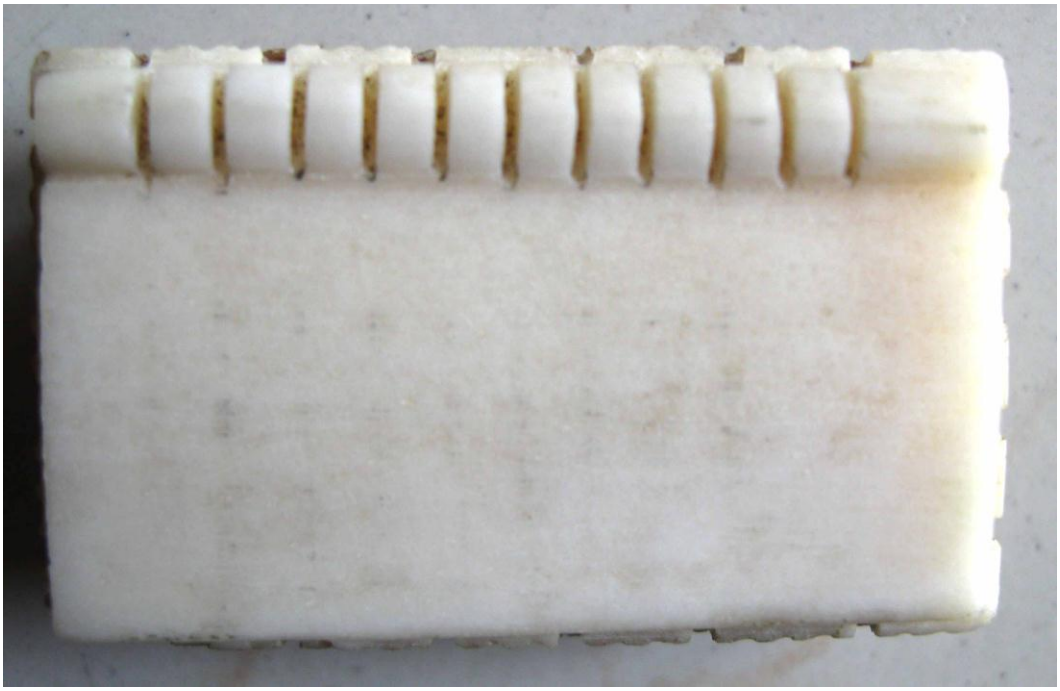

आशीष (हरिभाऊ म्यूज़िकल, मुंबई)

श्री आशीष जी से बातचीत के दौरान कुछ बातें सामने आई हैं जो इस प्रकार है–

प्र॰1. आपने किनसे सीखा अपनी परम्परा के बारे में बताइए?

उ॰ हम लोग चार पीढ़ी से वाद्य निर्माता का काम कर रहे हैं। प्रारम्भ में हमारे दादाजी वाद्यों के मरम्मत का काम करते थे। धीरे–धीरे बनाने का काम करने लगे। दादाजी से मेरे पिताजी ने सीखा पिताजी से मैंने सीखा। दादा जी सर्वप्रथम हारमोनियम बनाने का काम करते रहे तत्पश्चात् समय के साथ लगभग सभी प्रकार के भारतीय वाद्य यंत्रों को बना रहे है। मूलतः हम लोग मुम्बई के ही निवासी है।

प्र॰ संतूर बनाने के लिए कौन सी लकड़ी का प्रयोग करते है और सर्वप्रथम आपने कब बनाया?

उ॰ संतूर से सम्बन्धित कुछ बातें मैं आपको बताना चाहूँगा। हमारे पास कश्मीर के बने हुए संतूर, मरम्मत के लिए आते थे जिसका कोई मानक नहीं था भारतीय शास्त्रीय संगीत के रागों को बजाने के लिए उपयुक्त नहीं था। सर्वप्रथम मेरे दादाजी ने 1975 में पच्चीस सेतुओं (ब्रिज) वाला संतूर बनाया। इस संतूर को हमने पं॰ शिवकुमार शर्मा को दिखाया। शिव जी ने ढांचा की तारीफ की लेकिन टोनल क्वालिटी से बिल्कुल खुश नहीं थे। लगभग पाँच वर्षों की मेहनत के बाद उनके अनुरूप हमने संतूर बनाया जो

उन्हें पसंद आया। लेकिन अभी भी टोनल क्वालिटी (सुरो की गुणवत्ता) से संतुष्ट नहीं थे। इसके पश्चात हमने 27 ब्रिज तथा अंत 31 ब्रिज का संतूर बनाया। समय के साथ–साथ हमने तुन की लकड़ी तथा प्लाईवुड मिलाकर संतूर बनाया जिसकी टोनल क्वालिटी अच्छी थी।

प्र॰3. आप इसका माप क्या रखते हैं जैसे कि लम्बाई–चौड़ाई तथा आधार किस प्रकार रखते हैं?

उ॰ इसकी लम्बाई हम 2 फीट ऊँचा तथा लगभग 22 से 23 ईच रखते है। आधार का प्रयोग ब्रिज तथा संतूर का ऊपरी भाग के सस्टेन (टिकाव) के लिए करते हैं। आधार को L आकार में प्रयोग करते है। कोई भी सुधार हम लोग अपने अनुभव के आधार पर ही करते है।

प्र॰4 लकड़ी और प्लाई के अलग–अलग प्रयोग से टोनल क्वालिटी में क्या फर्क पड़ता है?

उ॰ प्रमुख रूप से नियमित संतूर (विद्यार्थी) के लिए हम प्लाईवुड की लकड़ी का प्रयोग करते हैं जिसकी लागत कम होती है लेकिन व्यवसायिक संतूर बनाने के लिए मैं पाईन लकड़ी का प्रयोग करते हैं जिसकी कीमत थोड़ी ज्यादा होती है परन्तु उसकी टोनल क्वालिटी और स्वरों की गुणवत्ता अच्छी होती है।

प्र॰5 तारों का प्रयोग किस प्रकार करते हैं तथा पॉलिश की तकनीक क्या है?

उ॰ नियमित संतूर में स्टेनलैस स्टील की तारों का प्रयोग करते हैं जो कि मध्य और तार सप्तक में लगाया जाता है। मन्द्र सप्तक में गिटार की तारों का प्रयोग किया जाता है। व्यवसायिक संतूर में जर्मन और अमेरिकन तारों का प्रयोग किया जाता है। संतूर बनाने में अच्छी पॉलिश का प्रयोग होता है या कभी–कभी कलाकार के निवेदन पर मैट पॉलिश का प्रयोग करते हैं।

प्र॰.6 संतूर के ब्रिज किस लकड़ी से बनते हैं हड्डी, एबोनी, सिनथैटिक तीनों के प्रयोग से टोनल क्वालिटी में क्या फर्क पड़ता है?

उ॰ ब्रिज बनाने के लिए मूल रूप से हम शीशम जैसी सख्त लकड़ी का प्रयोग है। ब्रिज के ऊपर कभी हड्डी कभी एबोनी और कभी सख्त प्लास्टिक जो कि कलाकार के पसंद के अनुसार करते हैं। क्योंकि किसी को खुली टोन किसी का माइक्रोफोनिक तथा किसी को रिकार्डिंग के अनुरूप चाहिए होता है।

प्र॰7 कलम का माप क्या रखते है तथा किसी लकड़ी के द्वारा बनाया जाता है और लकड़ी का सिज़निग कितना समय एवं कैसे करते हैं? इसके अतिरिक्त कीड़े या दीमक से बचाव के लिए कोई खास दवाई या फ्यूमिगेशन करते हैं?

उ॰ कलम की बनावट लगभग 6 ईंच की लकड़ी की होती है जो कि शीशम या टीक वुड की बनी होती है का प्रयोग किया जाता है। लकड़ी की सिंज़निंग के लिए हमारे पास कोई प्रावधान नहीं है इसलिए लकड़ी को

हम काट कर रखते लेते हैं लगभग डेढ़ साल पुरानी लकड़ी जो सूखी होती है का प्रयोग करते हैं।

प्र॰8 संतूर की बनावट में पहले अब में क्या अंतर आया है?

उ॰ पहले के संतूर की तुलना में आज के संतूर का भार कम है। टोनल की स्वर गुणवत्ता पहले से अच्छी हो गई है।

प्र॰9 यातायात की दृष्टि से संतूर केस (बाक्स) की बनावट में किन बातों का ध्यान रखते हैं तथा दूसरे संतूर निर्माताओं से आपका संतूर किस प्रकार अलग है?

उ॰ यातयात को ध्यान में रखते हुए गत्ते से बना हुआ फाइबर बॉक्स का प्रयोग करते हैं जिसका वजन कम एवं मज़बूत होता है। हमारे संतूर की टोनल क्वालिटी माइक्रोफोमिक है और इसका वजन भी कम है।

श्री शमशेर राज (राज म्यूजिकल दिल्ली)

श्री शमशेर राज संतूर के बारे में चर्चा करने के बाद निम्नलिखित तथ्य सामने आए हैं जो इस प्रकार हैं–

प्र॰1. सर्वप्रथम आप अपनी परम्परा के बारे में बताइए?

उ॰ हमारे पूर्वज लाहौर (पाकिस्तान के निवासी) हैं। लगभग चार पीढ़ी से हमारे परिवार में वाद्य निर्माण का कार्य चल रहा है। मेरे पिताजी का नाम हंसराज है।

प्र॰2 सीजनिंग के लिए (लकड़ी की) आप क्या उपाय करते हैं?

उ॰ लकड़ी को हम पांच–छः साल तक ज़मीन के नीचे दबाकर रखते हैं। उसमें से जो सूखी लकड़ी होती है उसे हम सीजनिंग करते हैं।

प्र॰3. किस प्रकार की लकड़ी आप प्रयोग करते हैं एवक उसका माप क्या रखते हैं?

उ॰ सामान्यतः शहतूत और रोजवुड की लकड़ी का प्रयोग करते हैं आकार की कोई निश्चितता नहीं है। कलाकार को आवश्यकतानुसार ही उसका निर्माण करना होता है।

प्र॰4. संतूर की ब्रिज और पॉलिश की प्रक्रिया के बारे में बताइए?

उ॰ रोजवुड और आबनुश की लकड़ी का प्रयोग ब्रिज बनाने के लिए किया जाता है। ब्रिज के उपर हड्डी और सिनथैटिक का प्रयोग किया जाता है। परम्परागत प्रक्रिया द्वारा ही हम पॉलिश्या करते हैं।

प्र॰5. संतूर का कलम और तुम्बा किस प्रकार से बनाते हैं?

उ॰ इसका कलम रोजवुड और मालबरी की लकड़ी से बनाते हैं तथा तुम्बे के लिए भी लकड़ी का ही प्रयोग करते हैं।

प्र॰6. टोनल क्वालिटी को बेहतर करने के लिए आप क्या करते हैं?

उ॰ कुछ वर्ष पहले खुली आवाज की संतूर का प्रचलन था परन्तु आजकल माइल्ड टोन को ध्यान में रखते हुए सपोर्ट लकड़ी और तारों के अलग–अलग गेज का प्रयोग करते हैं। मेरे द्वारा बने हुए संतूर मजबूत एवं टिकाऊ होती है।

दलजीत सिंह (अमृत म्यूजिक दिल्ली)

संतूर के विषय में श्री दलजीत सिंह के विचार इस प्रकार हैं–

प्र॰1. संतूर कितने समय से बना रहे हैं और कौन सी लकड़ी का प्रयोग करते हैं?

उ॰ वैसे तो वाद्य यंत्र बनाने का काम कई पीढ़ियों से है लेकिन संतूर बनाने का कार्य लगभग तीस पैंतीस वर्षों से करते आ रहे हैं।

प्र॰2 कलम निर्माण एवं तारों का प्रयोग किस प्रकार करते हैं?

उ॰ कलम का कोई माप नहीं है फिर भी लगभग पां ईंच के आकार का जो कि शीशम की लकड़ी का बना होता है प्रयोग करता हूँ। स्टेनलैस स्टील जमीन एवं गिटार की तारों का प्रयोग किया जाता है।

प्र॰3 आपके संतूर की क्या विशेषताएँ हैं?

उ॰ मैं पं॰ शिवकुमार शर्मा जी की शैली – पं॰ भजन सोपोरी जी की शैली एवं छोटे बच्चों के लिए अलग–अलग आकार के संतूर बनाता हूँ जो कि काफी सराहा जा रहा है।

प्र॰4 लकड़ी को आप कितने समय तक सीजन करते हैं एवं पॉलिश करने के तरीके के बारे में विस्तारपूर्वक समझाइए?

उ॰ हमे सीज़निंग के ज़रूरत नहीं पड़ती है संतूर बनाने के लिए आम या नीम की लकड़ी का प्रयोग नही करता हूँ। इसके लिए टीक एवं

रोज़वुड की सूखी लकड़ी का प्रयोग होता है। पॉलिश में विशेष रूप से हम पेंट के साथ मार्केट के रंगों का प्रयोग नहीं करते। संतूर का आकार एक साउण्ड बाक्स की तरह होता यदि हम इसे अधिक पेंट करेंगे तो उसकी आवाज़ दबा जाएगी इसलिए हम वाद्य के स्वाभाविक रंग का ही प्रयोग करते हैं।

प्र॰5 ब्रिज एवं स्पोर्ट के बार में कुछ बताइए?

उ॰ ब्रिज बनाने के लिए शीशम और टीक की लकड़ी का प्रयोग करते हैं तथा उसके ऊपर लकड़ी तथा ब्रास धातु का प्रयोग करता हूँ। स्पोर्टक प्रयोग कलाकार के पसंद के अनुसार खुली और माईक्रोफॉनिक आवाज़ को ध्यान में रखते हुए करता हूँ।

प्रथम चरण (First Report) में मुख्य रूप से मैंने सूफियाना संतूर पं॰ शिवकुमार शर्मा की शैली तथा पं॰ भजन सोपोरी जी के संतूर की बनावट एवम् वादन शैली के बारे में चर्चा की। प्राप्त पुस्तकों, पत्रिकाओं, इंटरनेट एवं साक्षात्कार के माध्यम से सामग्री संग्रहण में मुझे सहायता मिली। विगत तीन चार महीनों के अंतर्गत सर्वप्रथम आशीष जी (हरिभाऊ म्यूज़िकल मुम्बई) साक्षात्कार लिया जिन्होंने पारम्परिक संतूर एवं भारतीय शास्त्रीय संगीत में प्रयुक्त होने वाले संतूर के बारे में ईमानदारी एवं धैर्य से जानकारी प्रदान की। तत्पश्चात् दिल्ली के संतूर निर्माता रहें हैं। रोज़वुड के अतिरिक्त में विशेषता हार्डवुड की लकड़ी का प्रयोग करता हूँ। जिसस

टोन शार्प आती है परन्तु कभी–कभी टोनल क्वालिटी ही माईल्ड आए इसके लिए साफ्ट वुड का भी प्रयोग करता हूँ।

श्री शमशेर राज (राज म्यूजिकल) एवम् दलजीत (अमृत म्यूज़िक) दिल्ली से संतुर निर्माण सम्बन्धित जानकारी प्राप्त की।

इस प्रथम चरण के रिपोर्ट में तीनों वाद्य निर्माताओं से साक्षात्कार की डी.वी.डी. (वीडियो) एवम् वाद्य निर्माण से सम्बन्धित फोटोग्राफ संलग्न हैं। संतूर निर्माण से सम्बन्धित विशेष जानकारी द्वितीय चरण के रिपोर्ट में प्रस्तुत करुँगा जिसमें कलकत्ता एवं कश्मीर के वाद्य निर्माताओं के साक्षात्कार एवं निर्माण प्रणाली पर चर्चा की जाएगी। इस चरण में संतूर के अलग–अलग भाग की निर्माण विधि उसका वीड़ियो, फोटोग्राफ एवं समानताओं – विभिन्नताओं के बारे में विस्तारपूर्वक चर्चा करूँगा।

चित्रावली

Raj Musicals
BUY ONLINE : www.